DATE 20.1.25
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता') लेखक - रामचंद्र शुक्ल
शेष भाग-3
पुस्तक - नवतरंग - 8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग-8 के पृष्ठ-132 पर दिए पाठ-16 "मित्रता" के शेष भाग को पढ़ेंगे।

सब बच्चे अपनी पुस्तक और अभ्यास पुस्तिका खोल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। बच्चो! पाठ को आगे पढ़ने से पहले यह जान लेते हैं कि पिछले भाग में हमने क्या पढ़ा था।

शुक्लजी ने मित्रता के संबंध में बताते हुए कहा है कि जब कोई युवक किशोरावस्था में बाहर जाता है तो उसे मित्र चुनने में कठिनाई होती है। यदि उसका व्यवहार मेल-मिलाप वाला होता है तो उसकी लोगों से जान-पहचान बढ़ जाती है जो बाद में मित्रता का रूप धारण कर लेती है। मित्रों के चुनाव पर उसके जीवन की सफलता निर्भर होती है क्योंकि अच्छे-बुरे मित्रों की संगति ही उसे अच्छा या बुरा बना सकती है। युवा लोग मित्र बनाने से पहले मित्रों के आचरण व प्रकृति पर ध्यान नहीं रखते, वे केवल उनकी बाहरी विशेषताओं पर मुग्ध हो जाते हैं। वहीं मनुष्य जब घोड़ा खरीदता है तो उसके गुण-दोषों की परख के बाद ही लेता है। किसी प्राचीन विद्वान ने भी कहा है कि विश्वासपात्र मित्र से भारी रक्षा रहती है, जिसे ऐसा मित्र मिल जाए, उसे मानो खजाना मिल गया।

जब व्यक्ति छात्रावास में रहता है तब उस पर मित्र बनाने की धुन सवार रहती है। बचपन की मित्रता भी अद्भुत है। उसमें जितनी दूसरों की बातें मन को लगती हैं, उतनी

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-16 "मित्रता") लेखक- रामचंद्र शुक्ल

ही जल्दी गठना- मनाना भी हो जाता है। मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं कि दो लोगों के आचरण और स्वभाव में समानता हो जैसे राम और लक्ष्मण एक-दूसरे से विपरीत थे परन्तु दोनों में प्रगाढ़ प्रेम था। उसी तरह कर्ण और दुर्योधन के स्वभाव में विभिन्नता होने के बाद भी दोनों में गहरी दोस्ती थी। इसी प्रकार अन्य अनेक उदाहरण हैं।

बच्चो! अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए पृष्ठ-134 के तीसरे अनुच्छेद से पढ़ना आरंभ करते हैं। सब बच्चे ध्यान पूर्वक पाठ के शेष भाग को पढ़ेंगे।

रामचंद्र शुक्ल जी कहते हैं कि मित्र के महान कार्यों में सहायता देने, उत्साहित करने जैसे कार्त्तव्यों का निर्वाह वही व्यक्ति कर सकता है, जो स्वयं दृढ़विचारों तथा सत्य संकल्प वाला होता है। अत: मित्र बनाते समय हमें ऐसे व्यक्ति को खोजना चाहिए जिसमें हमसे बहुत अधिक साहस एवं आत्मबल विद्यमान हो। इस प्रकार के मित्रों को ही वास्तविक मित्र माना जासकता है, जिनसे कभी किसी प्रकार के धोखे या कपट की आशंका नहीं रहेगी।

सच्चा मित्र वह है जो अपनी ऊर्जा और शक्ति से अधिक अपने एक दोस्त की सहायता करना चाहता है। यह एक मित्र का दायित्व है कि दुःख के समय वह अपने मित्र की सहायता करे। उसमें बहादुरी और उत्साह का निर्माण कर सके। उसे खुद को अकेला महसूस करने के लिए हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए हालाँकि उसका मनोबल बढ़ाए रखना चाहिए।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह बुद्धि का भी क्षय करता है। एक बार जब मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 "मित्रता") आचार्य रामचंद्र शुक्ल

पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों से अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी।

बच्चो! आचार्य रामचंद्र शुक्लजी कहते हैं कि कुसंगति सबसे बड़ा दुर्गुण है अर्थात् जब व्यक्ति को बुखार का असर व्यक्ति के शरीर पर पड़ता है। लेकिन कुसंगति का असर ज्वर (बुखार) व्यक्ति को अंदर से तोड़ता है। उसे अंदर से तोड़ता है, कमज़ोर करता है क्योंकि कुसंगति का प्रभाव व्यक्ति के मन और शरीर पर पड़ता है। यह हमारी बुद्धि का नाश करता है। कुसंगति का ज्वर व्यक्ति की नीति व सद्वृत्ति का भी नाश करता है। यह व्यक्ति को अवनति के गड्ढे में गिराता है। घड़ी भर का कुसंग भी व्यक्ति को पतन की तरफ़ ले जाता है जबकि अच्छी संगति से व्यक्ति दिन-प्रतिदिन उन्नति करता है। उसका चरित्र उज्ज्वल और निष्कलंक हो जाता है। अतः हमें बुरे लोगों की संगति से बचना चाहिए तथा उत्तम चरित्र वाले, सच्चे, ईमानदार, विवेकशील लोगों के साथ रहना चाहिए और उन्हीं से मित्रता करनी चाहिए।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय,
एक लीक काजर की लागी है पै लागी है।।

इस का अर्थ है कि काजल की कोठरी में कितना भी चतुर व्यक्ति प्रवेश करे। वह चाहे कितनी भी सावधानी से कोठरी में घुसे, उसे काजल की कालिख की एक लकीर लग ही जाएगी। अतः मित्रता का असर व्यक्ति के व्यक्तित्व पर अवश्य पड़ता है, इसलिए मित्रता सोच-समझकर करनी चाहिए।

अब मैं पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताने जा रही हूँ।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा - आठवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-16 'मित्रता') आचार्य रामचंद्र शुक्ल

शब्दार्थ :-

शिष्ट - सभ्य
समर्थ - योग्य
संग्राम - युद्ध
अवनत - गिरा हुआ
क्षय - नाश
उज्ज्वल - स्वच्छ
श्रेष्ठ - महान
पराक्रमी - वीर
बाधा - रुकावट
ज्वर - बुखार
कुंठित - जड, गतिहीन
निष्कलंक - बेदाग

बच्चो! आज हमारा यह पाठ समाप्त हुआ। आशा है कि यह पाठ आपको अच्छी तरह से समझ में आ गया होगा। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :-

सब बच्चे कराए गए कार्य को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। कठिन शब्दों के अर्थ लिखकर याद करेंगे। पृष्ठ-136 पर लिखे प्रश्नोत्तर को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ - 4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner